CBSE Class 09 Hindi Course B
NCERT Solutions
स्पर्श पाठ-12 सियारामशरण गुप्त [कविता]

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. कविता की उन पंक्तियों को लिखिए, जिनसे निम्नलिखित अर्थ का बोध होता है -

1.1 सुखिया के बाहर जाने पर पिता का हृदय काँप उठता था।

उत्तर:- मेरा हृदय काँप उठता था,
बाहर गई निहार उसे;

यही मनाता था कि बचा लूँ

किसी भॉति इस बार उसे ।

1.2 पर्वत की चोटी पर स्थित मंदिर की अनुपम शोभा।

उत्तर:- ऊँचे शैल शिखर के ऊपर
मंदिर था विस्तीर्ण विशाल;
स्वर्ण-कलश सरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि-कर-जाल।

1.3 पुजारी से प्रसाद/फूल पाने पर सुखिया के पिता की मन:स्थिति।

उत्तर:- भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ-सा पाकर मैं।
सोचा,-बेटी को माँ के ये
पुण्य-पुष्प दूँ जाकर मैं।

1.4 पिता की वेदना और पश्चाताप।

उत्तर:- अंतिम बार गोद में बेटी,
तुझको न ले सका मैं हा !
एक फूल माँ का प्रसाद भी
तुझको दे न सका मैं हा !

2.1 बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?

उत्तर:- बीमार बच्ची जो कि तेज ज्वर से ग्रसित थी। उसने अपने पिता के सामने देवी के चरणों का फूल-रूपी प्रसाद पाने की इच्छा

प्रकट की।

2.2 सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया?
उत्तर:- सुखिया का पिता अछुत है। अपनी बीमार पुत्री की अंतिम इच्छा पूरी करने हेतु वह देवी मॉ के प्रसाद के रूप मे फूल पाने के लिए मंदिर में प्रवेश कर जाता है। इस कारण उस पर मंदिर की पवित्रता और देवी की गरिमा नष्ट करने का आरोप लगाया गया, जिसकी सजा उसे सात दिनों की कैद के रूप मे मिली।

2.3 जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया?
उत्तर:- जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को मरघट मे मरा हुआ पाया, जहॉ उसकी चिता जलकर राख की ढेरी बन चुकी थी।

2.4 इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर:- सियारामशरण गुप्त की एक फूल की चाह एक प्रसिद्ध लंबी कविता है। यह पाठ उस कविता का एक अंश है। यह कविता समाज में व्याप्त अस्पश्यता या छूआछूत की समस्या को चिन्हित करती है। यह समस्या आज भी हमारे समाज में किसी-न-किसी रूप में व्याप्त है। महामारी की चपेट में आई एक अछूत कन्या सुखिया की अंतिम इच्छा है कि वह देवी मॉ के प्रसाद के रूप में एक फूल को प्राप्त करे।

पिता अपनी कन्या की इस इच्छा को कैसे टाल देता उस अछूत पिता ने सभी तरह के प्रतिबंध के बावजूद मंदिर में आराधना करने तथा देवी का प्रसाद पाने की ठान ली। वह मंदिर पहूँचा तो मंदिर के पुजारियो को यह बात अच्छी नही लगी। उन्होने कानून के दवारा उस दलित पिता को कैद करवा दिया और उसे सात दिनों का कठोर कारावास मिला।

वह अपनी मतप्राय बच्ची सुखिया के बारे में बताता रहा, परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी। अंतत उसे सजा भुगतनी पडी। जब वह कारावास से छूटा, तो उसे अपनी कन्या की चिंता हुई। वह भागा-भागा घर आया तो उसे ज्ञात हुआ कि उसकी कन्या का देहान्त हो गया है और उसे लेकर परिवारजन श्मशान गए है। वह जब श्मशान पहुँचा, तो पाया कि उसकी कन्या राख की ढेरी बन चुकी है। वह कन्या के वियोग मे तडपता रहा और कन्या के लिए कुछ न कर पाने का अवसाद ऑसू बनकर निकल पडा। इस प्रकार, कवि ने इस कविता में सामाजिक विषमता का वीभत्स एवं मार्मिक पक्ष प्रस्तुत किया है।

2.5 इस कविता में से कुछ भाषिक प्रतीकों/बिम्बों को छाँटकर लिखिए - उदाहरण - अंधकार की छाया
उत्तर:- 1. अश्रु-राशियों
2. हदय-चिताऍ धधकाकर 3. अलस- दोपहरी 4. जलते-से अंगारो से, झुलसी-सी आखें 5. स्वर्ण-कलश सरसिज विहसित

---

3 निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट करते हुए उनका अर्थ-सौंदर्य बताइए -
1. अविश्रांत बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं

उत्तर:- आशय - इन पंक्तियों का आशय यह है कि सुखिया के पिता की आँखों से सात दिनों तक आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। अर्थ सौंदर्य - कन्या की इच्छा को पूर्ण करने के लिए दलित पिता मंदिर में प्रवेश कर गया। फलत उसे इस दूस्साहस के लिए सात दिनो के कारावास की सजा दी गई। कन्या मरणासन्न अवस्था में है और पिता उसकी अंतिम इच्छा पूर्ण कर पाने में विवश । इसलिए उसकी ऑखें से ऑसुओं की धारा लगातार वह रही है। ऑसुओ से उसकी ऑखे खाली नही हो रही है अर्थात वह अपनी कन्या की मतप्राय स्थति से बेहद दुखी है।

2. बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी
उत्तर:- आशय - इन पंक्तियों का आशय यह है कि बेटी की चिता तो जल कर बुझ गई पर उस चिता को देखकर पिता की वेदना जलने लगी।
अर्थ सौंदर्य - पिता कारावास की सजा काटने के बाद अपनी कन्या की दशा जानने हेतु व्याकुल हो उठा। वह बदहवास-सा घर की ओर भागा। घर पहुॅच कर ज्ञात हुआ के कन्या को परिवारजन श्मशान ले गए है। वह रोता बिलखता श्मशान पहूॅचा, जहॉ कन्या का शरीर राख्ा की ढेरी मे बदल चुका था।
अपनी कन्या की बुझी हुई चिता देखकर उसका हदय धधक उठा। मन अतिरिक्त पीडा से भर उठा। ऑखो में स्पष्ट दिख रहा था । एक पिता का हदय चीत्कार कर रहा था।

3. हाय ! वही चुपचाप पड़ी थी
अटल शांति-सी धारण कर
उत्तर:- आशय - इन पंक्तियों का आशय यह है कि सुखिया जब ज्वर से पीड़ित हुई तो वह शांति से लेट गई।
अर्थ-सौंदर्य - कवि ने एक पिता की वेदना को व्यक्त करते हुए लिखा है कि पिता सोच रहा है कि जो मासूम कन्या एक पल के लिए कही ठहरती न थी। हरपल खेलना-कूदना लगा रहता था, आज वही चंचल कन्या महामारी की शिकार होकर अचेत-सी पडी है- चुपचाप। वह शांति इतनी मारक थी कि कन्या के पिता का हदय तार-तार हो रहा था। उसने अपनी खेलती-कूदती चंचल कन्या को इतना शांत कभी नही देखा था।

4. पापी ने मंदिर में घुसकर
किया अनर्थ बड़ा भारी
उत्तर:- आशय - इन पंक्तियों का आशय यह है कि यहाँ पर लोगों ने मंदिर में घुसने के कारण सुखिया के पिता का बड़ा भारी अपमान किया। लोगों ने उसके इस प्रयास को भारी अनर्थ करार दे दिया।
अर्थ-सौंदर्य कवि ने यहॉ सामाजिक विभेद का एक ऐसा प्रसंग उठाया है, जिसके केंद्र में छुआछुत है। मंदिर में अछूतों का प्रवेश निषेध था, लेकिन अपनी मरणासन्न कन्या की अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए एक अछूत पिता मंदिर में देवी के प्रसाद के रूप में फूल लेने गया तो मंदिर एवं धर्म के ठेकेदार पुजारियों ने इसे अपना और मंदिर का अपमान समझा।
उनके अनुसार एक अछूत ने मंदिर में घुसकर पाप किया है। उसने चिरकाल से चली आ रही तथाकथित मंदिर की पवित्र परंपरा को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। वह पापी है, अत उसे दंड मिलना चाहिए।